अपने फीचर से फ्यूचर दिखाओ

सभी सदा स्नेही हैं? जैसे बापदादा सदा बच्चों के स्नेही और सहयोगी हैं, सभी रूपों से, सभी रीति से सदा स्नेही और सहयोगी हैं, वैसे ही बच्चे भी सभी रूपों से, हर रीति से बाप समान सदा स्नेही और सहयोगी हैं? सदा सहयोगी वा सदा स्नेही उसको कहते हैं जिसका एक सेकेण्ड भी बाप के साथ स्नेह न टूटे वा एक सेकेण्ड, एक संकल्प भी सिवाए बाप के सहयोगी बनने के न जाये। तो ऐसे अपने को सदा स्नेही और सहयोगी समझते हो वा अनुभव करते हो? बापदादा के स्नेह का सबूत वा प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाई देता है? तो बच्चे भी जो बाप समान हैं उन्हों के भी स्नेह और सहयोग का सबूत वा प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाई दे रहा है। स्नेही आत्मा का स्नेह कभी छिप नहीं सकता। कितना भी कोई अपने स्नेह को छिपाना चाहे लेकिन स्नेह कभी गुप्त नहीं रहता। स्नेह किसी न किसी रूप में, किसी न किसी कर्तव्य से वा सूरत से दिखाई अवश्य देता है। तो अपने सूरत को दर्पण में देखना है कि मेरी सूरत से स्नेही बाप की सीरत दिखाई देती है? जैसे अपने सूरत को स्थूल आइने में देखते हो वैसे ही रोज अमृतवेले अपने आपको इस सूक्ष्म दर्पण में देखते हो? जैसे लक्षणों से हर आत्मा के लक्ष्य का मालूम पड़ जाता है वा जैसा लक्ष्य होता है वैसे लक्षण स्वत: ही होते हैं। तो अपने लक्षणों से लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप में कहाँ तक दिखाते हो, अपने आपको चेक करते हो? किसी भी आत्मा को अपने फीचर्स से उस आत्मा का वा अपना फ्यूचर दिखा सकते हो। लेक्चर से फीचर्स दिखाना तो आम बात है लेकिन फीचर्स से फ्यूचर दिखाना–यही अलौकिक आत्माओं की अलौकिकता है। ऐसे मेरे फीचर्स बने हैं, यह दर्पण में देखते हो? जैसे स्थूल सूरत है, श्रृंगार से अगर सूरत में कोई देखे तो पहले विशेष अटेन्शन बिन्दी के ऊपर जायेगा, वैसे जो बिन्दी स्वरूप में स्थित रहते हैं अर्थात् अपने को इन धारणाओं के श्रृंगार से सजाते हैं, ऐसे श्रृंगारी हुई मूरत के तरफ देखते हुए सभी का ध्यान किस तरफ जायेगा? मस्तक में आत्मा बिन्दी तरफ। ऐसे ही कोई भी आत्मा आप लोगों के सम्मुख जब आती है तो उन्हों का ध्यान आपके अविनाशी तिलक की तरफ आकर्षित हो। वह भी तब होगा जब स्वयं सदा तिलकधारी हैं। अगर स्वयं ही तिलकधारी नहीं तो दूसरों को आपका अविनाशी तिलक दिखाई नहीं दे सकता।

जिन्होंने प्रीत की रीति निभाई है वा प्रीत बुद्धि बने हैं, ऐसे प्रीत की रीति निभाने वाले बच्चों को सारे विश्व के सर्व सुखों की प्राप्ति सदाकाल के लिए होती है। बाकी सभी को मुक्तिधाम में बिठाकर प्रीत की रीति निभाने वाले बच्चों को विश्व का राज्य-भाग्य प्राप्त कराते हैं। वैसे तो सारी सृष्टि की आत्मायें बच्चे हैं लेकिन अन्य सभी आत्माओं को अल्पकाल का सुख प्राप्त होता है और प्रीत की रीति निभाने वालों को सदाकाल की प्राप्ति होती है। ऐसे स्नेही बच्चों के सिवाए और कोई का भी सर्व सम्बन्धों से सर्व प्राप्ति का पार्ट नहीं है। प्रीत निभाने वाले बच्चों के ही बाप भी दिन-रात गुण-गान करते हैं। जिससे अति स्नेह होता है तो उस स्नेही के लिए सभी को किनारे कर सब कुछ उनके अर्पण करते हैं, यह है स्नेह का सबूत। तो सदा स्नेही और सहयोगी बच्चों के सिवाए अन्य सभी आत्माओं को मुक्तिधाम में किनारे कर देते हैं। तो जैसे बाप स्नेह का प्रत्यक्ष

सबूत दिखा रहे हैं ऐसे अपने आपसे पूछो–सर्व-सम्बन्ध, सर्व-आकर्षण करने वाली वस्तुओं को अपनी बुद्धि से किनारे किया है? सर्व रूपों से, सर्व सम्बन्धों से, हर रीति से सभी कुछ बाप को अर्पण किया है? सिवाए बाप के कर्तव्य के एक सेकेण्ड भी और कोई व्यर्थ कार्य में अपना सहयोग तो नहीं देते हो? अगर स्नेह अर्थात् योग है तो सहयोग भी है। जहाँ योग है वहाँ सहयोग है। एक बाप से ही योग है तो सहयोग भी एक के ही साथ है। योगी अर्थात् सहयोगी। तो सहयोग से योग को देख सकते हो। योग से सहयोग को देख सकते हो। अगर कोई भी व्यर्थ कर्म में सहयोगी बनते हो तो बाप के सदा सहयोगी हुए? जो पहला-पहला वायदा किया हुआ है उसको सदा स्मृति में रखते हुए हर कर्म करते हो? कहाँ-कहाँ भक्तों मुआफिक आप बच्चे भी बाप से ठगी तो नहीं करते हो? भक्तों को कहते हो ना, भक्त ठगत हैं। तो आप लोग भी ठगत तो नहीं बनते हो? अगर तेरे को मेरा समझ काम में लगाते हो तो ठगत हुए ना। कहना एक और करना दूसरा, इसको क्या कहा जाता है? कहते तो यही हो ना कि तन-मन-धन सब तेरा। जब तेरा हो गया फिर आपका उस पर अपना अधिकार कहाँ से आया? जब अधिकार नहीं तो उसको अपनी मन-मत से काम में कैसे लगा सकते हो? संकल्प को, समय को, श्वाँस को, ज्ञान-धन को, स्थूल तन को अगर कोई भी एक खजाने को मन-मत से व्यर्थ भी गंवाते हो तो ठगत नहीं हुए? जन्म-जन्म के संस्कारों वश हो जाते हैं। यह कहाँ तक रीति चलती रहेगी? जो बात स्वयं को भी प्रिय नहीं लगती तो सोचना चाहिए–जो मुझे ही प्रिय नहीं लगती वह बाप को प्रिय कैसे लग सकती है? सदा स्नेही के प्रति जो अति प्रिय चीज़ होती है वही दी जाती है। तो अपने आपसे पूछो कि कहाँ तक प्रीत की रीति निभाने वाले बने हैं?

अपने को सदा हाईएस्ट और होलीएस्ट समझकर चलते हो? जो हाईएस्ट समझकर चलते हैं उन्हों का एक-एक कर्म, एक-एक बोल इतना ही हाईएस्ट होता है जितना बाप हाईएस्ट अर्थात् ऊंच ते ऊंच है। बाप की महिमा गाते हैं ना–ऊंचा उनका नाम, ऊंचा उनका धाम, ऊंचा काम। तो जो हाईएस्ट है वह भी सदैव अपने ऊंचे नाम, ऊंचे धाम और ऊंचे काम में तत्पर हों। कोई भी निचाई का कार्य कर ही नहीं सकते हैं। जैसे जो महान् आत्मा बनते हैं वह कभी भी, किसी के आगे झुकते नहीं हैं। उनके आगे सभी झुकते हैं तब उसको महान् आत्मा कहा जाता है। जो आजकल की महान् आत्माओं से भी महान्, श्रेष्ठ आत्मायें, बाप की चुनी हुई आत्मायें हैं, विश्व के राज्य के अधिकारी हैं, बाप के वर्से के अधिकारी हैं, विश्व कल्याणकारी हैं, ऐसी आत्मायें कहाँ भी, कोई भी परिस्थिति में वा माया के भिन्न-भिन्न आकर्षण करने वाले रूपों में क्या अपने आप को झुका सकती हैं? आजकल के कहलाने वाले महात्माओं ने तो आप महान् आत्माओं की कॉपी की है। तो ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें कहाँ भी, किसी रीति झुक नहीं सकती। वे झुकाने वाले हैं, न कि झुकने वाले। कैसा भी माया का फोर्स हो लेकिन झुक नहीं सकते। ऐसे माया को सदा झुकाने वाले बने हो कि कहाँ-कहाँ झुक करके भी देखते हो? जब अभी से ही सदा झुकाने की स्थिति में स्थित रहेंगे, ऐसे श्रेष्ठ संस्कार अपने में भरेंगे तब तो ऐसे हाईएस्ट पद को प्राप्त करेंगे, जो सतयुग में प्रजा स्वमान से झुकेगी और द्वापर में भिखारी हो झुकेंगे। आप लोगों के यादगारों के आगे भक्त भी झुकते रहते हैं ना। अगर यहाँ अभी माया के आगे झुकने के संस्कार समाप्त नहीं

किये, थोड़े भी झुकने के संस्कार रह गये तो फिर झुकने वाले, झुकाने वालों के आगे सदैव झुकते रहेंगे। लक्ष्य क्या रखा है–झुकने का वा झुकाने का? जो अपनी ही रची हुई परिस्थिति के आगे झुक जाते हैं–उनको हाईएस्ट कहेंगे? जब तक हाईएस्ट नहीं बने हो तब तक होलीएस्ट भी नहीं बन सकते हो। जैसे आपके भविष्य यादगारों का गायन है–सम्पूर्ण निर्विकारी। तो इसको ही होलीएस्ट कहा जाता है। सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् किसी भी परसेन्टेज में कोई भी विकार तरफ आकर्षण न जाए वा उनके वशीभूत न हो। अगर स्वप्न में भी किसी भी प्रकार से विकार के वश, किसी भी परसेन्टेज में होते हो तो सम्पूर्ण निर्विकारी कहेंगे? अगर स्वप्न-दोष भी है वा संकल्प में भी विकार के वशीभूत हैं तो कहेंगे विकारों से परे नहीं हुए हैं। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र वा निर्विकारी अपने को बना रहे हो वा बन गये हो? जिस समय लास्ट बिगुल बजेगा उस समय बनेंगे? अगर कोई बहुत समय से ऐसी स्थिति में स्थित नहीं रहता है तो ऐसी आत्माओं का फिर गायन भी अल्पकाल का ही होता है। ऐसे नहीं समझना कि लास्ट में फास्ट जाकर इसी स्थिति को पा लेंगे। लेकिन नहीं। बहुत समय का जो गायन है उसको भी स्मृति में रखते हुए अपनी स्थिति को होलीएस्ट और हाईएस्ट बनाओ। कोई भी संकल्प वा कर्म करते हो तो पहले चेक करो कि जैसा ऊंचा नाम है वैसा ऊंचा काम है? अगर नाम ऊंचा और काम नीचा तो क्या होगा? अपने नाम को बदनाम करते हो। तो ऐसे कोई भी काम नहीं हो यह लक्ष्य रखकर ऐसे लक्षण अपने में धारण करो। जैसे दूसरे लोगों को समझाते हो कि अगर ज्ञान के विरुद्ध कोई भी चीज़ स्वीकार करते हो तो ज्ञानी नहीं, अज्ञानी कहलाये जायेंगे। अगर एक बार भी किसी नियम को पूरी रीति से पालन नहीं करते हैं तो कहते हो ज्ञान के विरुद्ध किया। तो अपने आपसे भी ऐसे ही पूछो कि अगर कोई भी साधारण संकल्प करते हैं तो क्या हाईएस्ट कहा जायेगा? तो संकल्प भी साधारण न हो। जब संकल्प श्रेष्ठ हो जायेंगे तो बोल और कर्म आटोमेटिकली श्रेष्ठ हो जायेंगे। ऐसे अपने को होलीएस्ट और हाईएस्ट, सम्पूर्ण निर्विकारी बनाओ। विकार का नाम-निशान न हो। जब नाम-निशान ही नहीं तो फिर काम कैसे होगा? जैसे भविष्य में विकार का नाम-निशान नहीं होता है ऐसे ही हाईएस्ट और होलीएस्ट अभी से बनाओ तब अनेक जन्म चलते रहेंगे। अच्छा, ऐसे ऊंचे नाम और ऊंचे काम करने वालों को नमस्ते।

वरदान:- सदाकाल के अटेन्शन द्वारा विजय माला में पिरोने वाले बहुत समय के विजयी भव

बहुत समय के विजयी, विजय माला के मणके बनते हैं। विजयी बनने के लिए सदा बाप को सामने रखो–जो बाप ने किया वही हमें करना है। हर कदम पर जो बाप का संकल्प वही बच्चों का संकल्प, जो बाप के बोल वही बच्चों के बोल–तब विजयी बनेंगे। यह अटेन्शन सदाकाल का चाहिए तब सदाकाल का राज्य-भाग्य प्राप्त होगा क्योंकि जैसा पुरूषार्थ वैसी प्रालब्ध है। सदा का पुरूषार्थ है तो सदा का राज्य-भाग्य है।

स्लोगन:-

सेवा में सदा जी हाजिर करना–यही प्यार का सच्चा सबूत है।

ओम् शान्ति 27-7-10 मधुबन

''बड़े भाईयों की भटठी में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश''

– – गुल्जार दादी

आज सदा के सदृश्य बापदादा के पास वतन में पहुंची, तो सामने से ही नयनों के स्नेह और शक्ति सम्पन्न दृष्टि पाते हुए सामने पहुंच गई और बांहों के अमूल्य हार में लवलीन हो गई। सच तो यह मिलन इतना प्यारा है जो आप भी अवश्य लवलीन बनने का अनुभव करते ही होंगे। कुछ समय बाद बाबा बोले, आज क्या समाचार लाई हो ? मैं बोली बाबा आज तो आपके सर्व स्थान से आये हुए निमित्त पाण्डवों की यादप्यार लाई हूँ। बाबा बोले, पाण्डव सेना का गायन है विजयी पाण्डव। अक्षोणी सेना को जीतने वाले पाण्डव। तो ऐसे पाण्डव सेना को देख बापदादा खुश हैं और सदा हर बच्चे को ``बाप की आशाओं के दीपक हैं'', इस नज़र से देखते हैं क्योंकि हर बच्चा बापदादा के साथी हैं। अब बापदादा सिर्फ यही कहता है कि जैसे सेवा के साथी बने हो वैसे सिर्फ यह ध्यान रखना कि साथी के साथ स्वयं को भी साक्षी दृष्टा बनाए, सम्बन्ध में आते बाप समान साक्षी स्थिति में भी सदा रहना है। आप घर में वा सेन्टर में नहीं रहते हो लेकिन सारे विश्व की स्टेज का हीरो एक्टर हो इसलिए सबकी नज़र आपके ऊपर है क्योंकि आप ज़ीरो के साथी हो।

ऐसे कहते बाबा बोले, बाप को भी यह भट्ठियां बहुत अच्छी लगती हैं क्योंकि सबके ऊपर ``सम्पन्न और समान बनने का'' छाप लग रहा है। ऐसे कहते ही बाबा के नयनों में सब भट्ठी के बच्चे समा गये। फिर बाबा बोले आज इन पाण्डवों को भी वतन का सैर कराते हैं। बस बाबा का संकल्प और सब वतन में पहुंच गये। आज वतन में बाबा ने सबके लिए डबल वी (V) के रूप में बैठने के चबूतरे बनवाये थे। बापदादा सामने थे और सब वी सेफ में बैठे हुए थे। यह भी दृष्य बहुत अच्छा लग रहा था। उस वी के आगे 3 चबूतरे और भी लगे हुए थे जिसमें तीनों भाई आगे आगे बैठे थे और सभी विशेष स्नेह में समाये हुए थे। बापदादा हर बच्चे को बहुत स्नेह, स्वमान भरी दृष्टि दे रहे थे और बोले, हर बच्चा बाप के लाडले दिल के दुलारे हैं। उसके बाद बाबा बोले, बच्ची अब इन बच्चों को भी सैर करायेंगे ना। तो सब बहुत खुश हो रहे थे। फिर तो बापदादा आगे आगे चले और सब पीछे पीछे चल पड़े। तो बाबा हम सबको एक पहाड़ी पर ले चले, तो पहाड़ी के नीचे से बहुत लोगों की आवाज आ रही थी कि सुख दो, शान्ति दो, मेहर करो, क्षमा करो, हमारे पूर्वज कहाँ हो, हमारे पूज्य कहाँ हो .... ऐसी आवाजें सुनाई दे रही थी। तो बाबा बोले, अब इन्हों को सकाश दो। जैसे साकार में सेवा के निमित्त हो वैसे इस सेवा में भी अभ्यास कर निमित्त बनो। तो सब इनट्रेस्ट से सकाश देने की प्रैक्टिस करने लगे। ड्रामा अनुसार हमारी भट्ठी में भी यही बात चल रही थी। उसके बाद बाबा हम सबको पहाड़ी का चक्र लगाते नीचे ले आये और फिर उसी चबूतरों में सब बैठ गये। बाबा भी बैठे थे, सब दृष्टि का आनंद ले रहे थे। दृष्टि का आनंद लेने के बाद बाबा बोले, बच्ची अब जब बाबा को अपनी कमजोरियां लिख दी हैं तो सिर्फ लिख दी हैं या बाबा को देकर समाप्त कर दी ? दी हुई वस्तु वापस ली नहीं जाती। सब बच्चे सयाने समझदार हैं, मददगार हैं इसलिए निमित्त हैं तो देना अर्थात् समाप्ति।

उसके बाद बाबा बोले बच्ची, इन विशेष बच्चों को क्या सौगात देंगी ? मैं मुस्कराई तो क्या देखा! बाबा का संकल्प करना और सौगातें पहुंच गई। सौगात क्या थी! तो देखा कंगन थे, जिसमें बीच में शिवबाबा सच्चे डायमण्ड से चमक रहा था और दोनों तरफ लिखत थी -`` बाप समान सम्पन्न भव! बाप समान सम्पूर्ण भव''। यह लिखत भी बहुत चमक रही थी। बाबा ने सबको अपने हाथ से पहनाया। सब बड़ी खुशी में अतीन्द्रिय सुख में झूम रहे थे। फिर बाबा ने सबको सर्किल में खड़ा किया और दृष्टि देते अति स्नेह का हाथ हिलाते सबको साकार वतन में भेज दिया। अच्छा। ओम् शान्ति।